

कैपिटल कॉम्पलेक्स के 10 साल, कार्बूजिए फेस्टिवल में विरासत से रूबरू होगा चंडीगढ़

Festival of Architecture

25 सितंबर से 6 अक्टूबर तक चलेगा ली कार्बूजिए फेस्टिवल। यह चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर की ओर से करवाया जाएगा।

सिटी रिपोर्टर | चंडीगढ़



कार्बूजिए को आप हर दिन जीते हैं, अपने शहर चंडीगढ़ में। जब पहुंचते हैं कैपिटल कॉम्पलेक्स तो कार्बूजिए की रचना आपको अपनी ओर फुकारती है। टावर ऑफ शोडो समझाता है कि कैसे तपती धूप में भी आर्किटेक्चर को संतुलित रखा जा सकता है। इस शहर में अजनबी आकर जब सुकून महसूस करते हैं तो यहां के पेड़ बताते हैं कि कार्बूजिए ने ही शहर को ऐसे प्लान किया कि यहां ग्रीन स्पेस बन पाए। ऐसे कार्बूजिए और उनकी टीम ने शहर को अकार दिया। 2016 में कैपिटल कॉम्पलेक्स को यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट में दर्ज किया गया। भारत की 45 यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स हैं। कैपिटल कॉम्पलेक्स को मिले इस दर्जे को एक दशक पूरा हो चुका है। उसी का जश्न ली कार्बूजिए फेस्टिवल के साथ मनाया जाएगा। इसे लेकर चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर की प्रिंसिपल प्रो. संगीता बग्गा ने बताया - कॉलेज में ही यह फेस्टिवल 25 सितंबर से 6 अक्टूबर तक चलेगा। इसे कम, एक्सप्लोर, क्वेश्चन और डिस्कवर थीम के साथ किया जाएगा। स्टूडेंट्स के काम की एजीविवेशन, कैपस विजिट, साइट विजिट, ट्रेजर हंट आदि शामिल होंगे। इंटर कॉलेज कंपीटिशन भी होगा। एंटी प्री।



खोजिए, सवाल कीजिए, पता लगाइए...

- **स्टूडेंट्स वर्क एजीविवेशन** - युवा आर्किटेक्चर के प्रोजेक्ट्स के जरिए चंडीगढ़ को समझने का मौका मिलेगा।
- **वर्ल्ड हेरिटेज इंसिफ्रेशन** - ली कार्बूजिए की तैयार 17 साइट्स को इंस्टॉलेशन के जरिए दिखाया जाएगा।
- **कैपस विजिट** - स्कूल के स्टूडेंट्स को चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में विजिट करवाया जाएगा।
- **साइट विजिट** - कैपिटल कॉम्पलेक्स साइट विजिट कराया जाएगा।
- **इंटर-कॉलेज कंपीटिशन** - क्विज कंपीटिशन, डिबेट कंपीटिशन व स्टूडेंट्स एक्टिविटीज इंटर-कॉलेज स्तर पर होगा। ट्रेजर हंट - चंडीगढ़ से जुड़ा ट्रेजर हंट होगा। आपको सुरागों, कहानियों और जगहों के जरिए चंडीगढ़ को जानने का मौका मिलेगा। पेक कैपस में शहर की विरासत और छिपी हुई खास जगहों को खोजने का एक रोमांचक अनुभव।



रजिस्ट्रेशन के लिए इस QR कोड को स्कैन कर फेस्ट में हिस्सा लें...

यह रहेगा शेड्यूल...

- 25 सितंबर से 6 अक्टूबर तक - आर्किटेक्चर मैथ्यु नोथिकी के आर्किटेक्चरल आइडियाज, डिजाइन को एग्जिबिशन के जरिए दिखाया जाएगा।
- 25 सितंबर से 6 अक्टूबर तक - स्टूडेंट्स का काम होगा डिस्प्ले। इसमें उनके प्रोजेक्ट्स, आर्टवर्क्स, आइडियाज को प्रदर्शित किया जाएगा।
- 25 सितंबर से 5 अक्टूबर तक - कल्चरल प्रोग्राम में आर्किटेक्चर अमल सोहल बांसुरीवादन करेंगे। भांगड़ा परफॉर्मेंस होगी। कथक परिचय नंदिता पुरी देंगी। परफॉर्मेंस रहेगी प्रियंका कपिल की। नुक्कड़ नाटक के साथ डांस वर्कशॉप और हास्य कविता भी होगी।
- 25 सितंबर से 27 सितंबर तक - शैले डोम कार्यक्रम आयोजित करेंगी अपूर्णा शर्मा। इसमें शैले डोम वर्कशॉप, डोम कंस्ट्रक्शन, मटीरियल, टेडिशनल क्राफ्ट्समैनशिप थू हैंड्स ऑन लॉन्ग की बात होगी।
- 27 सितंबर - आर्किटेक्चर अमन सोहल वाटरकलर वर्कशॉप देंगे। समय रहेगा सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक।
- 28 और 29 सितंबर - स्कूल स्टूडेंट्स के कैपस विजिट करवाए जाएंगे। इसमें सीसीए कैपस की प्लानिंग, आर्किटेक्चर, पर्सनल स्पेस को समझाया जाएगा। समय सुबह 11 बजे



- से दोपहर 1 बजे तक रहेगा।
- 29 और 30 सितंबर को - कॉब आर्किटेक्चर टेक्नीक को लेकर आर्किटेक्चर आकाशा सूद की वर्कशॉप होगी।
- 30 सितंबर से 1 अक्टूबर तक - पॉटरी, क्ले मॉडलिंग और प्रिंटमेकिंग वर्कशॉप होगी।
- 1 अक्टूबर - आर्किटेक्चर संगीत शर्मा की किताब पर चर्चा और प्रेजेंटेशन होगी।
- 2 से 4 अक्टूबर - आर्किटेक्चर सिद्धार्थ विंग बैबू वर्कशॉप देंगे।
- 3 अक्टूबर - आर्किटेक्चर जीवन ज्योत फोटोग्राफी से रिफ्लेक्ट फोटोग्राफ, विजुअल स्टोरीज, कंपोजिशन दिखाएंगे।
- 4 अक्टूबर - इंटर-कॉलेज क्विज, ट्रेजर हंट और डेक्लामेशन होगा।
- 5 अक्टूबर - कॉलेज के 1972-77 बैच स्टूडेंट्स की ओर से स्पॉन्सर्ड फोटोग्राफी कंपीटिशन की जजमेंट।
- 6 अक्टूबर - ली कार्बूजिए डे सेलिब्रेट होगा।

CHANDIGARH TRIBUNE dated 21.09.2026

Le Corbusier festival from Sept 25 at CCA

TRIBUNE NEWS SERVICE

CHANDIGARH, SEPTEMBER 20

The Chandigarh College of Architecture (CCA), Sector 12, will organise the Le Corbusier Festival of Architecture from September 25 to October 6 to mark 10 years since Chandigarh's architectural work by Le Corbusier received the UNESCO World Heritage tag.

The programme will include exhibitions of stu-

dent work and that of architect Matthew Nowicki, besides displays of miniature furniture and tapestry paintings. An interactive architectural installation, "Shallow Dome", will remain open throughout the festival.

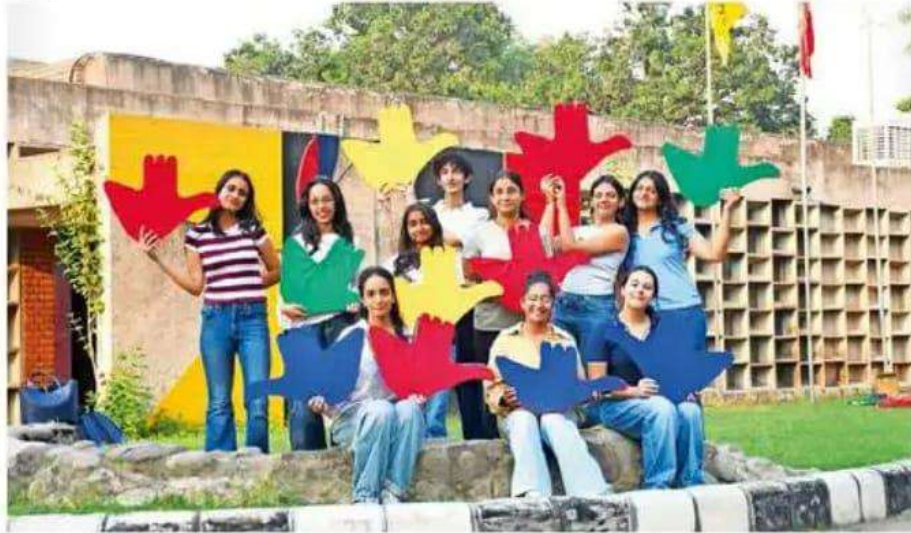
The programme aims to explore architecture beyond buildings through craft, materials, photography and public engagement. The festival will conclude on October 6 in the city.

AMAR UJALA dated 23.09.2026

25 से ली कार्बूजिए फेस्टिवल ऑफ आर्किटेक्चर

चंडीगढ़। चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर, सेक्टर-12 में 25 सितंबर से 6 अक्टूबर तक ली कार्बूजिए फेस्टिवल ऑफ आर्किटेक्चर आयोजित होगा। चंडीगढ़ के आधुनिक वास्तुशिल्प को यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा मिलने के 10 साल पूरे होने पर आयोजित फेस्ट का समापन ली कार्बूजिए डे पर होगा। यहां छात्रों के काम और प्रसिद्ध आर्किटेक्ट मैथ्यू नीविकी की प्रदर्शनी, मिनिएचर फर्नीचर, टेपेस्ट्री पेंटिंग्स और शैलो डोम इंस्टॉलेशन आकर्षण होंगे। संवाद

ली कार्बूजिए की आर्किटेक्चरल दुनिया को स्टूडेंट्स कर रहे तैयार



Festival Preparation

25 सितंबर से शुरू होने वाले ली कार्बूजिए फेस्ट की तैयारियां चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में शुरू हो चुकी हैं। हमने उसका जायजा लिया...

सिटी रिपोर्टर/चंडीगढ़

25 सितंबर से 6 अक्टूबर तक चलने वाले ली कार्बूजिए फेस्टिवल की तैयारी चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में चल रही है। कार्बूजिए ने कई प्रोजेक्ट्स बनाए, जिनमें से 17 इमारतों और जगहों को यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट का स्टेटस मिला। अब उस काम को और कार्बूजिए की लाइफ को दिखाने के लिए स्टूडेंट्स अलग-अलग इंस्टॉलेशन तैयार कर रहे हैं। यह फेस्टिवल चंडीगढ़ के कैपिटल कॉम्प्लेक्स को यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट के खिताब को 10 साल पूरे होने के मौके पर मनाया जा रहा है। बुधवार को स्टूडेंट्स बुड से आर्ट इंस्टॉलेशन बनाते दिखे। प्रिंसिपल संगीता बग्गा ने बताया- इंस्टॉलेशन के साथ-साथ स्टूडेंट्स ने स्मृति-चिह्न भी बनाए। इसके लिए पहले स्केच बनाए, फिर अलग-अलग मीडियम से तैयार किया।

कार्बूजिए की 17 साइट्स होंगी प्रस्तुत



स्टूडेंट तिस्रया गुप्ता ने बताया- इसमें 17 पीस बनेंगे, जो जिगजैग आकार में होंगे। हर प्लेट पर ली कार्बूजिए के उस आर्किटेक्चर के मॉडल प्रदर्शित होंगे। इसमें चंडीगढ़ का कैपिटल कॉम्प्लेक्स, फ्रांस का विला सैवॉय, स्विट्जरलैंड का विला ल लाक, जर्मनी का वेइसनहोफ एस्टेट के घर, बेल्जियम का विला गुडते, जापान का नेशनल म्यूजियम ऑफ वेस्टर्न आर्ट, अर्जेंटीना में डॉ. कुरुश का घर आदि।

इंस्टॉलेशन में जीवन और पांच प्रिंसिपल



यह 4 बाय 8 फुट का आर्ट इंस्टॉलेशन है, जो ली कार्बूजिए के जीवन और सिद्धांतों को दर्शाएगा। इसमें उनके स्केच, पेंटिंग्स हैं। उनके पांच प्रिंसिपल भी इसमें होंगे, जैसे फ्री फसाड- इमारतों के बाहरी चेहरे, हॉरिजेंटल विंडोज, फ्री प्लान, रूफ गार्डन, पिलोटिस यानी इमारत को जमीन से ऊपर उठाने के लिए खंभों या स्तंभों का उपयोग करना। इसे स्केच के मुताबिक तैयार किया जा रहा है।

जानिए फेस्ट के बारे में...

फेस्टिवल की थीम है- कम, एक्सप्लोर, क्वेश्चन और डिस्कवर। एग्जीबिशन, कैप्स विजिट, साइट विजिट, ट्रेजर हंट आदि शामिल होंगे। इंटर कॉलेज कंपीटिशन में कोई भी हिस्सा ले सकता है। कार्बूजिए के काम पर चर्चा, विजय होगा। साथ ही आर्किटेक्ट मैथ्यू नोविकी के आर्किटेक्चरल आइडियाज, डिजाइन को एग्जीबिशन के जरिए दिखाया जाएगा। इसमें सीसीए कैप्स की प्लानिंग, आर्किटेक्चर, एनुकेशनल स्पेस को समझाया जाएगा। इंटर-कॉलेज विजिट, ट्रेजर हंट और डिक्लेमेशन, पॉर्टी, ब्ले मॉडलिंग और प्रिंटमेकिंग वर्कशॉप भी होंगी।

कार्बूजिए की 'फ्रेम्ड स्ट्रक्चर' तकनीक से बनी इमारतों को भूकंप भी नहीं हिला सकता

Corbusier Festival

शुक्रवार को सेक्टर-12 चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में ली कार्बूजिए फेस्टिवल शुरू हुआ, जो 6 अक्टूबर तक चलेगा।

अंशुत एन सावी | चंडीगढ़

संसार में जितनी यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स हैं, उनमें से 17 कार्बूजिए ने बनाई हैं। उनमें से एक है चंडीगढ़ का कैपिटल कॉम्प्लेक्स। इसे स्टेट्स मिले हुए 10 साल पूरे हो चुके हैं। इस मौके पर चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर की ओर से शुक्रवार को ली कार्बूजिए फेस्ट की शुरुआत हुई, जो 6 अक्टूबर तक जारी रहेगा। उद्घाटन समारोह में सेक्रेटरी इंजीनियरिंग व एजुकेशन आईएस प्रेरणा पुरी वतीर गेस्ट पहुंचीं। फेस्टिवल में स्टूडेंट्स के बनाए प्रोजेक्ट्स को मॉडल्स के रूप में प्रस्तुत किया गया। इन्हें सीसीए के फर्स्ट ईयर के स्टूडेंट्स ने पिछले एक महीने में तैयार किया। इस दौरान शैलो डोम वर्कशॉप भी शुरू हुई। हमने स्टूडेंट्स से बात की और प्रिंसिपल प्रो. संगीता बग्गा से जाना कि क्यों आज भी न केवल चंडीगढ़ बल्कि दुनिया में ली कार्बूजिए के काम को अनमैचेबल कहा जाता है।



चंडीगढ़ की योजना एक पेपर नैपकिन पर बनी

• कार्बूजिए के आर्किटेक्चर में क्या खास उनकी साइट्स को यह दर्जा मिला?

- प्रिंसिपल प्रो. संगीता बग्गा ने बताया- वर्ल्ड वॉर-2 के बाद बृटलिज्म आर्किटेक्चर को ली कार्बूजिए ने ही ईजाद किया। बॉम्बिंग के बाद ऐसी इमारतें बनाना बड़ा वास्तुशिल्प कदम था। कंक्रीट का उपयोग इसलिए संभव हुआ क्योंकि यह सामग्री बह सकती है। फॉर्मवर्क डालकर उसके अंदर कंक्रीट पोर किया जाता है, जिससे यह किसी भी आकार को ले सकती है। चंडीगढ़ के कैपिटल कॉम्प्लेक्स में भी इसका बड़ा उपयोग है। कार्बूजिए को मॉडर्न मूवमेंट का महत्वपूर्ण वास्तुकार माना जाता है। उनका इतना काम यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स में शामिल होना छोटी बात नहीं है। चंडीगढ़ एकमात्र शहर है, जिसकी योजना एक पेपर नैपकिन पर बनी थी और एक हेलीकॉप्टर से साइट का सर्वेक्षण कर उसे अंतिम रूप दिया गया।

• क्या कार्बूजिए ने चंडीगढ़ में जो इमारतें बनाईं, वह एंटी हैज़र्ड हैं?

- जिनमें कार्बूजिए ने बनाया, वह एंटी अर्थक्वेक हैं। भूकंप आने पर सबसे पहले जहां दो दीवारें या पिलर आपस में मिलते हैं, वहां अस्तर पड़ता है। अगर ये जोड़ कमजोर हों, तो इमारत ढह जाती है। इसलिए कार्बूजिए ने इमारतों को 'फ्रेम्ड स्ट्रक्चर' तकनीक से बनाया। अगर इमारत से सारा सीमेंट और कंक्रीट हटा भी दिया जाए, तो भी अंदर लोहे के सरियों का मजबूत ढांचा खड़ा रहेगा। इन इमारतों को बनाने के लिए रीइन्फोर्सड सीमेंट कंक्रीट का इस्तेमाल किया है। इसमें लोहे के सरियों के ढांचे में सीमेंट और बजरी ढाला जाता है, जो सूखने के बाद चट्टान जैसा मजबूत हो जाता है।



17 यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स...

भारत - कैपिटल कॉम्प्लेक्स, चंडीगढ़
फ्रांस - मेजों ला रोश ए जॉनरे, सिते फ्रूजे, विला सेवॉय व लैंज द जारदिने, इम्यूबल मोलिट्र अपार्टमेंट, यूनिटे दाविताशियों हाउस, ला मान्यूफैक्चर आ सेंट दिने, शपैल नॉत्र दाम द्यू हॉ, कूर्वो सेंट मारी द ला तुरेत, कावानों द ली कार्बूजिए, फ्रांस- मेजों द ला कूलचूर द फर्मेने।
स्विट्जरलैंड - वील ला लाक ली कार्बूजिए, इम्यूआबल क्लार्ते।
अर्जेंटीना - कुर्शो हाउस
बेल्जियम - मेजों गुएत
जर्मनी - इम्यूआबल द ला वीजोफ़ जौडलुंग
जापान - नेशनल म्यूजियम ऑफ वेस्टर्न आर्ट

शैलो डोम आर्किटेक्चर...

आर्किटेक्ट अपूर्वा शर्मा शैलो डोम आर्किटेक्चर को लेकर वर्कशॉप



ले रही हैं। इसे लेकर डोम तैयार हो रहा है। उन्होंने बताया -

• स्ट्रक्चरल फॉर्म - शैलो डोम ऐसे गुंबद होते हैं, जिनकी ऊंचाई कम और फैलाव ज्यादा है।

• भार का वितरण - इसका गोल और फ्रेम

वाला ढांचा वजन और दबाव को चारों तरफ बराबर बांट देता है।

• मटीरियल - कंक्रीट और फ्रेमवर्क की मदद से इसे कोई भी मनचाहा और मजबूत आकार दिया जा सकता है।

शैलो डोम सस्टेनेबल तकनीक फिर से चर्चा में

LE CORBUSIER FEST

सेक्टर-12 के चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में ली कार्बूजिए फेस्टिवल चल रहा है। यहां आर्किटेक्ट अपूर्वा शर्मा रोहतक शैलो डोम वर्कशॉप कंडक्ट कर रही हैं। हमने जाना इस तकनीक के बारे में...

अंशुल एन साठी|चंडीगढ़

8x8 फीट के डोम में दिखाई तकनीक

दूर से देखने पर यह छत लगभग सपाट नजर आती है, लेकिन पास जाकर इसकी बनावट देखेंगे तो पता चलेगा कि यह हल्के घुमाव वाला डोम है। इसे न तो सामान्य आरसीसी स्लैब की तरह सरिया बांधकर बनाया गया है और न ही भारी फॉर्मवर्क के सहारे। यह है हरियाणा के रोहतक क्षेत्र की शैलो डोम तकनीक, जिसमें पतली ईंटों को खास ज्योमेट्री के साथ जोड़कर छत तैयार की जाती है। ली कार्बूजिए फेस्टिवल के तहत सेक्टर-12 के चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में इसी पारंपरिक तकनीक पर वर्कशॉप चल रही है। इसे आर्किटेक्ट अपूर्वा शर्मा कंडक्ट कर रही हैं। उनके साथ रोहतक से आए मास्टर क्राफ्ट्समैन आजाद सिंह और जितेन्द्र भी हैं। वर्कशॉप में लाइव डेमो के जरिए सीसीए के स्टूडेंट्स इस तकनीक को समझ रहे हैं। आज आर्किटेक्ट अमन सोहल वॉटरकलर वर्कशॉप लेंगे। समय रहेगा सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक।



क्राफ्ट्समैन आजाद सिंह और जितेन्द्र ने बताया - फेस्ट में बनाया गया डोम करीब 8x8 फीट का है। इसमें सामान्य ईंट के बजाय 1.5 इंच मोटी ब्रिक टाइल का इस्तेमाल किया गया। वैसे ईंट 3 इंच मोटी होती है। हम इससे काफी बड़े डोम 25x25 फीट तक के आकार में भी बनाते हैं। हमारे घरों में पीढ़ी दर पीढ़ी यह काम चल रहा है। इसे हर मौसम के मुताबिक तैयार कर सकते हैं। यह तकनीक सीखने में कम से कम दो साल लगते हैं। केवल ड्रॉइंग या किताब देखकर नहीं सीख सकते। ईंट कहां रखनी है, उसका कोण क्या होगा और अगली परत किस दिशा में जाएगी- यह अभ्यास से ही आता है। चौकोर, आयताकार के अलावा अलग आकार के स्पेस में भी इस तकनीक को अपनाया जा सकता है।

शैलो डोम पर वर्कशॉप का मकसद

आर्किटेक्ट अपूर्वा शर्मा ने बताया- 7 साल से रोहतक के कारीगरों के साथ इस पर काम कर रही हूँ। इसे क्लाइमेट के मुताबिक ईजाद किया था। कार्बूजिए के आर्किटेक्चर के साथ शैलो डोम जुड़ेगा तो बड़ा प्रयोग होगा। इसमें



उत्तर भारत के गर्म और ठंडे मौसम को देखते हुए डोम के ऊपर छोटी-छोटी पैरापेट बॉल बनाकर उनके बीच हल्के मटीरियल की फिलिंग करते हैं, जैसे रोड़ी या एससीसी ब्लॉक्स। इसके बाद ऊपर की सतह को फ्लैट बनाते हैं, ताकि टैरेस के रूप में भी इस्तेमाल कर सकें। इससे इंसुलेशन बना रहेगा। खास बात ईंटों को लगाने का तरीका है। ज्यादातर कंस्ट्रक्शन में ईंट को गीला करके लगाते हैं, लेकिन इसमें सूखी ईंट इस्तेमाल होती हैं। रेत और सीमेंट के लगभग 2:1 अनुपात वाले मोर्टार लगते हैं।

■ क्या इसे सस्टेनेबल आर्किटेक्चर कह सकते हैं? - अब जीरो कार्बन फुटप्रिंट आर्किटेक्चर की मांग है। ऐसे में शैलो डोम जैसी तकनीक चर्चा में है। इसमें आरसीसी स्लैब की तरह सरिया बांधकर कंक्रीट डालने की जरूरत नहीं होती। फॉर्मवर्क की जरूरत घट जाती है। हालांकि इसे पूरी तरह जीरो-कार्बन तकनीक नहीं कह सकते। क्योंकि ईंटों के निर्माण में भी ऊर्जा और एमिशन जुड़ा है। पिछले कई सौ साल से इस तकनीक से बने शैलो डोम आज भी सही सलामत हैं। इसे हम चंडीगढ़, न्यू चंडीगढ़, पंचकूला में भी प्रैक्टिस कर चुके हैं।

नए घर में पुरानी परंपरा को साथ लेकर चले



● 2020 में घर में जैक आर्च और शैलो डोम बनवाएं। दोनों ही संरचनाएं ईंटों से बनती हैं, लेकिन आकृति में अंतर होता है। क्योंकि हम रोहतक से हैं और हमारे पुराने घर में भी डोम बना था। ऐसे में शुरू से मन था कि नए घर में पुरानी परंपरा को साथ लेकर चलें। इससे घर तापमान के लिहाज से ठंडा रहता है। इसलिए घर के हर कमरे में रोहतक डोम से छतें बनवाई हैं। ●

- जितेंद्र सिंह, न्यू चंडीगढ़

CHANDIGARH TRIBUNE dated 30.09.2026

Le Corbusier Fest



Students perform during the Le Corbusier Festival at the Chandigarh College of Architecture.

ईंट, सीमेंट नहीं... मिट्टी, रेत और भूसे से बनाना सीख रहे ईको-फ्रेंडली फर्नीचर

Cob Workshop

मंगलवार से चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में कॉब फर्नीचर वर्कशॉप शुरू हुई, जो तीन दिन चलेगी।

सिटी रिपोर्टर चंडीगढ़

मिट्टी में पानी डालकर बच्चे अपने हाथों व पैरों दोनों से उसे मिला रहे थे। कम से कम आधा घंटा मिट्टी तैयार की गई। इसके बाद ठीक वैसे ही मिट्टी के उपले बनाए गए, जैसे गाँव में गाय के गोबर से बनते हैं। यह मिट्टी के उपले काम आते हैं कॉब आर्किटेक्चरल तकनीक में। मौका था मंगलवार को सेक्टर-12 के चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में शुरू हुई कॉब वर्कशॉप का। इसे आर्किटेक्ट आकांक्षा ने कंडक्ट किया। यह वर्कशॉप ली कार्बूजिए फेस्टिवल के तहत हुई, जो तीन दिन तक चलेगी। इसे चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर ने ही करवाया। कॉलेज में इस तकनीक से फर्नीचर तैयार किया जा रहा है। हमने आर्किटेक्ट से इस तकनीक को लेकर बात की। आर्किटेक्ट आकांक्षा सीसीए से 2003 की पासआउट हैं। अपने आर्किटेक्चरल स्टाइल को लेकर उन्होंने बताया - मेरी कोशिश रहती है कि हर बिल्डिंग का कार्बन



ऐसे बन रहा सोफा... यह एक सोफा बेंच है। सबसे नीचे ईंटों का बेस है। उसके ऊपर मिट्टी उपले के आकार के गोले बिछाए हैं। बीच में खाली बची जगह में मिट्टी को भरा है। इस तरह इसे ऊंचा करके बनाया जाएगा और सबसे ऊपर बैठने वाली जगह पर टाइल्स के चूरे को चिपकाकर मोजेक का डिजाइन बनेगा, जो बारिश में धोने से बचाएगा।

फुटप्रिंट कम से कम किया जाए, जिसके लिए रॉ मटीरियल 10-15 किमी के दायरे में हो।

• **मिट्टी के घर तो सुने थे, मगर मिट्टी से बना फर्नीचर? यह तकनीक कैसे काम करती है?**

- इमारत बनाने में समय लगता इसलिए सिर्फ फर्नीचर बना रहे हैं। यह कोई मैकेनिकल या चलने-फिरने वाली चीज नहीं, बल्कि एक क्रीडिंग तकनीक है, जो प्राकृतिक सामग्रियों से बनती है। इसमें मिट्टी,

रेत, भूसा (स्ट्रॉ) और पानी का मिश्रण तैयार किया जाता है। जिसे हाथों-पैरों की मदद से अच्छी तरह गुंथा जाता है। फिर एक आकार में उपले बनते हैं। जो भी चीज बनानी है, उसमें चौड़ाई को अधिक रखा जाता है ताकि मजबूती आ सके। यह ईको-फ्रेंडली होने के साथ सस्टेनेबल भी है।

• **बारिश में कितना सुरक्षित है?**

- पानी से बचाने के लिए दीवार के नीचे ईंटों का एक मजबूत बेस

(आधार) बनाया जाता है ताकि मिट्टी सीधे जमीन के पानी या नमी के संपर्क में न आए। इसके अलावा, ऊपर से छत की ढलान, छज्जा या कवरेज दी जाती है। बारिश से बचाने के लिए छत पर टाइल्स या स्लोपिंग रूफ बनाई जाती है। इसकी दीवारें आमतौर पर डेढ़ से दो फीट चौड़ी होती हैं, जो बेहतरीन इंसुलेशन देती हैं - यानी ठंडी जगहों पर घर को गर्म और गर्म जगहों पर ठंडा रखती हैं।



इसे बनाने की तकनीक क्या है?

इसका अनुपात मिट्टी की प्रकृति पर निर्भर करता है। आमतौर पर इसमें 50% सैंड (या सिल्ट), 30% से 50% क्ले और लगभग 20% तृट्टी (स्ट्रॉ) का इस्तेमाल होता है। अगर मिट्टी में पहले से ही रेत मौजूद हो, तो बाहर से रेत की मात्रा कम करनी पड़ती है। ऐतिहासिक रूप से लद्दाख, राजस्थान और दुनिया के कई हिस्सों में तीन से चार मंजिल की इमारतें और प्राचीन किले इसी तकनीक से बने हैं और सदियों से टिके हैं। ठंड या गर्म, दोनों ही तरह की जलवायु में यह अत्यधिक टिकाऊ और सुरक्षित हैं। कम खर्च आता है मगर इसके कारीगर कम हैं। पर्यावरण के अनुकूल है और भूकंप व आग से बचाता है।

Upcoming Event

आर्किटेक्ट संगीत शर्मा करेंगे चर्चा

चंडीगढ़ | चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में 'ली कार्बूजिए फेस्टिवल ऑफ आर्किटेक्चर 2026' के तहत 1 अक्टूबर को विशेष आर्किटेक्चरल टॉक होगी। यह सेशन कॉलेज परिसर स्थित 'अंजुमन' ऑडिटोरियम में सुबह 11:30 बजे से होगा। एंट्री फ्री है। संगीत शर्मा अपनी किताब "क्यूबिस्ट मॉडर्निज्म द आर्किटेक्चर ऑफ संगीत शर्मा" के जरिए अपनी डिजाइन फिलॉसफी, ज्योमेट्री, स्ट्रक्चर, रोशनी और मानवीय अनुभवों के संतुलन पर चर्चा करेंगे।

PERFORMANCE

कथक और भरतनाट्यम...



चंडीगढ़ | सेक्टर-12 के चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में पहला ली कार्बूजिए फेस्टिवल जारी है। दिन में प्रोजेक्ट्स, वर्कशॉप्स के बाद शाम को कल्चरल ईवनिंग होती है। मंगलवार को कथक व भरतनाट्यम नृत्य की प्रस्तुति हुई। कथक परफॉर्मेस एलिना और प्रियंका कपिल की रही। दोनों ने सोलो और डुएट परफॉर्मेस दी। शिव वंदना, ठुमरी, मीरा पद, चतुरंग प्रस्तुत किया। कथक के बाद डांसिंग डेंटिस्ट कहे जाने वाले वरुण खन्ना ने भरतनाट्यम की प्रस्तुति दी।



Classical dance meets design at architecture college fest

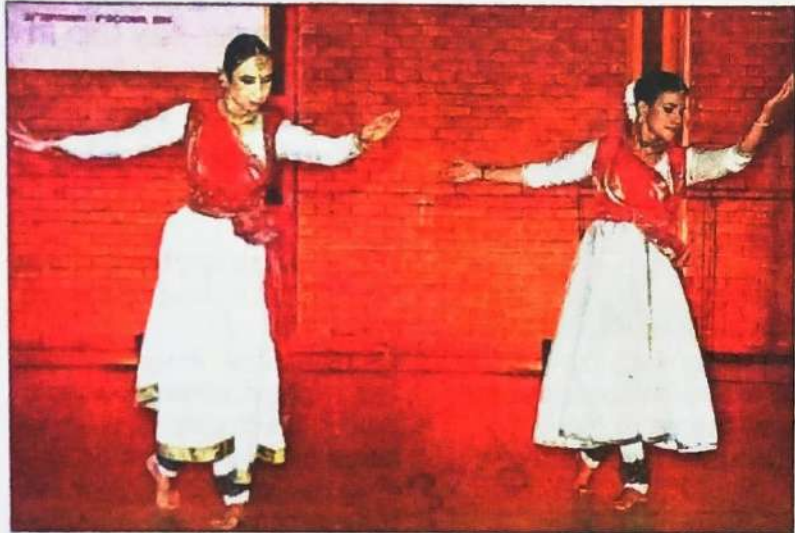
TIMES NEWS NETWORK

Chandigarh: Chandigarh College of Architecture hosted a classical dance evening Tuesday as part of the ongoing Le Corbusier Festival of Architecture 2026, bringing together architecture and the performing arts.

The programme featured Kathak performances by Priyanka Kapil and Elena Tsyganova, a Russian Kathak practitioner pursuing a master's degree in performing arts in India. The presentation began with solo compositions by the two artistes before moving into a duet.

Kapil has been associated with Kathak Kendra, New Delhi, and has performed at several national festivals and cultural events.

The evening also featu-



Kathak artistes Priyanka Kapil and Elena Tsyganova perform during a classical dance evening at Chandigarh College of Architecture as part of the Le Corbusier Festival of Architecture 2026 on Tuesday

red a Bharatanatyam recital by Dr Varun Khanna, a dentist and classical dancer trained under Padma Bhushan Dr Saroja Vaidyanathan and Rama Vaidyanathan.

The performances explored themes of rhythm, movement and storytelling. The event concluded with the felicitation of the participating artistes.

'क्ले मॉडलिंग में कोई तय तरीका नहीं, बल्कि अपनी कल्पना से तैयार कर सकते हैं आकृति'

Clay Workshop

बुधवार को सेक्टर-12 के चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्टिस्टिक में क्ले मॉडलिंग वर्कशॉप हुई। आज इसका आखिरी दिन है।

सिटी रिपोर्टर/चंडीगढ़

मिट्टी को हाथ में लेकर उसे अलग-अलग आकार देना केवल एक एक्टिविटी नहीं, बल्कि अपने ख्यालों को वास्तविक रूप देना भी है। क्ले मॉडलिंग के जरिए लोग खिलौने, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, मानव आकृतियां और वेस्तुओं की चीजों के मॉडल तैयार कर रहे हैं। इस दौरान वे मिट्टी को गुंथने, दबाने, काटने और आकार देने की तकनीकें सीखते हैं। इसमें खास बात यह है कि किसी तय तरीके से काम करने की जरूरत नहीं होती। आप अपनी कल्पना के अनुसार मॉडल तैयार कर सकते हैं। यह कहा आर्टिस्ट सहिल सोलंकी ने। वह बुधवार को चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्टिस्टिक सेक्टर-12 में आयोजित क्ले मॉडलिंग वर्कशॉप को कंडक्ट करते पहुंचे। इसमें कॉलेज के स्टूडेंट्स के साथ-साथ अन्य लोग भी शामिल हुए।

पार्टिसिपेंट्स बोले- मिट्टी से प्रयोग और डिजिटल डिटॉक्स का बेहतरीन तरीका



● मैंने स्वेन (हंस) बनाया। सेंटर में कुछ रखने की जगह रखी है। यह लड़कियों की आवाजी का प्रतीक भी है, जो जहाँ चाहे वहाँ उड़कर चली जाती है। ● - कमलजीत कौर, स्टूडेंट



● अर्किटेक्चरल प्रोजेक्ट में स्केल टेस्ट करते हैं, मगर मिट्टी से कुछ अलग बनाने का प्रयोग चंडीगढ़ में कुछ रूपों के कारण नहीं कर सकते। ऐसे में क्ले मॉडलिंग अलग अनुभव रहा। मैंने अपना चेहरा बनाया। ● - रोशन चौधरी



● दो घंटे फोन इस्तेमाल नहीं किया। डिजिटली डिटॉक्स होने का बेहतरीन तरीका है। यैसे भी मिट्टी को सूते ही सारा तनाव गायब हो जात है। आठन, केट, गॉडिजना बनाया। ● - ऐश्वर्या, प्रोफेशनल इन्स्ट्रक्टर



● मैं कुछ समय प्रकृति के साथ बिताना चाहती थी। मिट्टी से बेहतर और क्या हो सकता है। जितनी देर में हाथ क्ले को खूले रहे, मुझे लगा जैसे मैं किसी पेड़ को सू रही हूँ। मैंने फनावर पाँट बनाया है। ● - रिजुल, वर्किंग प्रोफेशनल



● हम कॉलेज में बसें हैं, लेकिन मिट्टी से कुछ बनाने का शौक बचपन का है। नवगर्भ में हम साड़ी बनाते हैं, पछो मोटिफ्स आज वहाँ बना रहे हैं जैसे चिड़िया, मोर, सूअर आदि। ● - चंदना और परवेश, बर्कसे

जानें क्ले मॉडलिंग की तकनीकों के बारे में...

वेनिंग - क्ले को बर-बर दबाकर और मोड़कर गुंथा जाता है। इससे मिट्टी एकसार हो जाती है और उसमें मौजूद हवा बाहर निकल जाती है।

पिंथिंग तकनीक - क्ले को एक गेंद बनाकर अंगूठे और अंगुलियों से धीरे-धीरे दबाकर कटोरी, बर्तन या छोटी आकृतियां बनाई जा सकती हैं।

कॉइल तकनीक - क्ले को लंबी और पतली रस्सी जैसी पट्टी में रोल कर एक के ऊपर एक रखकर मनचाही आकृति तैयार कर सकते हैं।

स्लेब तकनीक - क्ले को बेलन से चपटा कर पतली शीट बनाकर, इसे काटकर और अलग-अलग हिस्से जोड़कर आकृतियां बना सकते हैं।

मॉडलिंग और स्कल्पिंग - हाथों और छोटे औजारों से क्ले को दबाकर-जोड़कर किसी व्यक्ति, पशु-पक्षी या वस्तु की आकृति बना सकते हैं।

जोइने की तकनीक - क्ले को दो हिस्सों को आपस में जोड़ने के लिए उनकी सतह को थोड़ा खुरदरा कर फिर सिलन लगाकर दोनों हिस्सों को मजबूती से जोड़ सकते हैं।

सूखाने और फिनिशिंग - मॉडल पूरी तरह तैयार होने के बाद उसे धीरे-धीरे सूखाना। सूखाने के बाद उसकी सतह को चिकना कर सकते हैं।

सोनिवार सिटीजंस की गेट-टुगेदर



चंडीगढ़ न्यू चंडीगढ़ में फ्लोरेंस रिक्रिएशनल फोरम की ओर से गेट-टुगेदर हुई। इसमें 53 सोनिवार सिटीजंस ने हिस्सा लिया। शुरुआत गणपति वंदना से हुई। मंच संचालन संजीव मोंगा ने किया। कार्यक्रम में नवीन दीवान, अरुण अरोड़ा, कंवपल सिंह, शशि और रेनु शर्मा ने पुराने फिल्मी गीत गाए। सविता अग्रो ने डांस किया। हरजिंदर सिंह, अनिल अग्रवाल, रुबी वालिया

और धर्म गुप्ता ने हिंदी दिवस पर विचार रखे। चंद्र कला चावला और रोहिणी चावला ने नाटक के जरिए हिंदी विरासत को समझाया। सविता अग्रो ने 'डॉटर्स डे' पर कविता सुनाई। इनके अलावा राजेश्वरी कली, बलबीर शर्मा, डॉ. अर्चना-संजीव मोंगा, सलोनी-संजीव नाथिया, निलम गुप्ता, सुमन टंडन और सुमन नारंग के नेतृत्व में भी रचनाएं प्रस्तुत कीं।

स्वच्छता को सामाजिक जिम्मेदारी बनाना जरूरी

Street Play

एनआईटीटीआर में नुकड़ नाटक 'विरासत भी, विकास भी- स्वच्छता की नई कहानी' खेला गया।

सिटी रिपोर्टर/चंडीगढ़

सेवा संवाद अभियान 2026- 'सेवा ही संस्कृति' के तहत बुधवार को सेक्टर-26 राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीआर) में नुकड़ नाटक 'विरासत भी, विकास भी- स्वच्छता की नई कहानी' खेला गया। संगीत नाटक अकादमी, नई



दिल्ली और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में थिएटर फॉर चेंज (टीएफसी) चंडीगढ़ के कलाकारों ने प्रस्तुति दी और स्वच्छता को केवल सरकारी जिम्मेदारी न मानकर जनभागीदारी से जोड़ने का संदेश दिया। निदेशक हरजिंदर सिंह ने

बताया- स्वच्छता की शुरुआत घर से होनी चाहिए और इसके बाद गली, मोहल्ले व सार्वजनिक स्थानों को साफ रखने की जिम्मेदारी भी निभानी चाहिए। स्वच्छता केवल किसी अभियान तक सीमित नहीं, बल्कि इसे दैनिक आदत और सामाजिक जिम्मेदारी बनाना जरूरी है। नाटक में सरवजीत, राविन, सोनू, मोहinder, कानल गुप्ता, हरप्रीत सिंह और भूपिंदर कौर ने अभिनय किया। एनआईटीटीआर के निदेशक प्रो. (डॉ.) भोला राम गुजर ने कहा कि रोमांच के माध्यम से स्टूडेंट्स और शिक्षकों को सामाजिक विषयों को सहज तरीके से समझने का अवसर मिलता है।

Today's Event

आर्किटेक्ट संगीत शर्मा करेंगे चर्चा

चंडीगढ़ | चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में 'ली कार्बूजिए फेस्टिवल ऑफ आर्किटेक्चर 2026' के तहत 1 अक्टूबर को विशेष आर्किटेक्चरल टॉक होगी। यह सेशन कॉलेज परिसर स्थित 'अंजुमन' ऑडिटोरियम में सुबह 11:30 बजे से होगा। एंट्री फ्री है। संगीत शर्मा अपनी किताब "क्यूबिस्ट मॉडर्निज्म द आर्किटेक्चर ऑफ संगीत शर्मा" के जरिए अपनी डिजाइन फिलॉसफी, ज्योमेट्री, स्ट्रक्चर, रोशनी और मानवीय अनुभवों के संतुलन पर चर्चा करेंगे।

60 स्टूडेंट्स ने सीखी प्रिंटमेकिंग तकनीक

PrintMaking

वीरवार को चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर-12 में प्रिंट मेकिंग वर्कशॉप हुई। इसे आर्टिस्ट राहुल धीमान और नव्या ने कंडक्ट किया।

सिटी रिपोर्टर | चंडीगढ़

प्रिंट मेकिंग मशीन और मैनुअली यानी हाथों से प्रिंट तैयार किए जा रहे थे। इससे पहले लीनो शीट्स में स्टूडेंट्स ने खुद कार्व कर डिजाइन भी तैयार किए। ये स्टूडेंट्स आर्किटेक्चर और विभिन्न स्टडी से जुड़े रहे। चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर, सेक्टर-12 में चल रही प्रिंट मेकिंग वर्कशॉप में यही देखने को मिला। जहां आर्टिस्ट राहुल धीमान और नव्या ने प्रिंट मेकिंग की एक दिवसीय वर्कशॉप कंडक्ट की। ज्यादातर प्रतिभागियों ने पहली बार प्रिंट मेकिंग के बारे में जाना। नव्या ने बताया - वर्कशॉप में आर्किटेक्चर और विभिन्न स्टडी से जुड़े स्टूडेंट्स हैं। मैं खुद अभी मास्टर्स इन फाइन आर्ट्स पढ़ रही हूँ। ज्यादातर स्टूडेंट्स पहली बार प्रिंट मेकिंग से जुड़े, इसमें उन्हें इसके बेसिक्स सिखा रहे हैं। राहुल ने लीनोवुड तकनीक के बारे में बताया - इस शीट में सबसे आसानी से कार्विंग की जा सकती है, जिसमें मर्जी से डिजाइन तैयार किए जा सकते हैं। इसके बाद उन्होंने एक डिजाइन तैयार कर, उसमें इंक लगाकर उसका इंप्रेशन चम्मच की मदद से लिया। इसके बाद खुद स्टूडेंट्स ने भी मैनुअल और मशीन दोनों तरह से अपने डिजाइन तैयार किए। वर्कशॉप में 60 से ज्यादा प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिसमें 100 से ज्यादा प्रिंट डेवलप किए गए।



धार्मिक किताबों के लिए भारत आई प्रिंटिंग मशीन

राहुल ने प्रिंट मेकिंग के इतिहास पर कहा - देश में सर्वप्रथम प्रिंट मेकिंग वर्ष 1556 में शुरू हुई। इसमें गोवा में पुर्तगाल से प्रिंटिंग मशीन यहां धार्मिक किताबें छापने के लिए लाई गई। इसके बाद प्रिंट मेकिंग इंडस्ट्री में एडवांसमेंट आई और धीरे-धीरे यह आर्ट में बदली, जहां आर्टिस्ट किसी ऑब्जेक्ट में डिजाइन तैयार कर मशीन से उसकी छाप कला के रूप में डेवलप करते थे। हालांकि भारत में टैटू की परंपरा हजारों साल से है, जिसमें ब्लॉक के साथ हाथों में विभिन्न निशानों-प्रतीकों के प्रिंट लिए जाते थे।

यह बोले पार्टिसिपेंट्स

● पहली बार लीनो शीट पर डिजाइन तैयार कर रही हूँ। मुश्किल है क्योंकि अभी तक पेंसिल से ही डिजाइन बनाए हैं। लीनो शीट पर टूल्स से डिजाइन बनाए। हालांकि यह इतनी ठोस नहीं होती कि कार्विंग के दौरान मुश्किल हो, मगर एक गलत स्ट्रोक डिजाइन खराब कर सकता है। ●

- ज्योत्सना, प्रतिभागी

● वैक्यूम से फाइन आर्ट्स की पढ़ाई कर वापिस अपने शहर आई हूँ। अपने स्टूडियो में पेंटिंग से लेकर अलग अलग मीडियम पर काम करती हूँ, मगर यहां प्रिंट मेकिंग के बारे में ज्यादा जानने को मिला, जो बहुत मजेदार रहा। ●

- एकनूर, प्रतिभागी।

● इंडस्ट्रियल डिजाइन में स्टडी की। प्रिंट मेकिंग प्रोसेस मुश्किल है, क्योंकि इसमें किसी कागज पर नहीं बल्कि लीनो शीट पर डिजाइन तैयार किया। हाथों को टूल्स के साथ बिठाने में थोड़ा समय लगा, मगर बेसिक्स समझ आ गए। ●

- नंदिनी, प्रतिभागी।

युवा आर्किटेक्ट्स बांस से बना रहे 'टावर ऑफ शैडो' की रेप्लिका

सिटी रिपोर्टर/चंडीगढ़

ली कार्बूजिए द्वारा कंक्रीट से बनाए टावर ऑफ शैडो को बांस से तैयार कर रहे हैं चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर, सेक्टर-12 के स्टूडेंट्स। यहां शुक्रवार से तीन दिवसीय बांस पर आधारित वर्कशॉप शुरू हुई। आर्किटेक्ट सिद्धार्थ विज ने इसे कंडक्ट किया। पहले दिन स्टूडेंट्स ने रेप्लिका के लिए एक छोटा मॉडल तैयार किया, साथ ही कॉलेज के मैदान में गड्ढे भी किए। वर्कशॉप में बांस काटने से लेकर गड्ढा खोदने, उन्हें पेंट कर मोल्डिंग और टाईंग तक सब स्टूडेंट्स ही कर रहे हैं। ये स्ट्रक्चर 21 फीट का बनेगा। आर्किटेक्ट सिद्धार्थ ने कहा - बांस सस्टेनेबल लिविंग के लिए बेहतरीन मटीरियल है। जहां भी आर्किटेक्ट के स्टूडेंट्स मिलते हैं तो उन्हें बांस की खूबियां जरूर बताता हूं, ताकि वह इसे अपने डिजाइन में तरजीह दें। वर्कशॉप के पहले दिन स्टूडेंट्स को बांस कब काटा जाए, उसे केमिकल से ट्रीट कैसे किया जाए और उसे कैसे आर्किटेक्चरल शेप दी जाए सिखाया गया। उन्होंने कहा - बांस काटने का बेहतरीन समय बारिशों के बाद सर्दियां होती हैं और वो भी पूर्णमासी के 10 दिन के अंदर-अंदर। इस दौरान बांस के अंदर तरल पदार्थ कम होते हैं और उसमें कीड़ा भी नहीं लगता। मैंने हाल ही में पंजाब में एक प्रोजेक्ट के लिए बांस का काम किया। मगर बड़ी चुनौती यह है कि अब इसके कारीगर बहुत कम बचे हैं। फिलहाल बंगाल और ट्राइबल क्षेत्रों में ही कुछ कारीगर मिलते हैं।



टावर ऑफ शैडो

ली कार्बूजिए ने कैपिटल कॉम्प्लेक्स के निर्माण के साथ टावर ऑफ शैडो को वर्ष 1957 में बनवाया। यह खुला आर्किटेक्चरल डिजाइन है, जिसे सूर्य की गति का अध्ययन करने और यह साबित करने के लिए बनाया गया कि गर्म देशों में भी इमारतों के भीतर धूप को नियंत्रित करके तापमान को कम रखा जा सकता है।

ये प्रोजेक्ट बांस से बने



बेंगलुरु केम्पेगौड़ा एयरपोर्ट - इसके टर्मिनल की छत पर बांस से फाल्स सीलिंग बनाई है। बांस की पारंपरिक बुनाई से प्रेरित यह डिजाइन 50 से अधिक सालों तक टिकने के साथ फायरप्रूफ भी है। इसे 'बैबू एयरपोर्ट' भी कहते हैं।



अशोक युनिवर्सिटी का 'हंगरी कैटरपिलर' - यह बांस से बना फूड कोर्ट कैटरपिलर के आकार का है। इसे 'सस्टेनेबल डिजाइन ऑफ द ईयर 2025' का अवार्ड मिला है। यह 350 टन कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है।



ग्रीन स्कूल, बाली - इस स्कूल को पूरा परिसर बांस से बना है। क्लासरूम से लेकर खेल का मैदान, कैफे और ऑफिस आदि। यहां बिना दीवारों की खुली कक्षाओं में बच्चे सीधे प्रकृति से जुड़कर पढ़ते हैं।

ये कहा स्टूडेंट्स ने



पहले दिन बैबू के बारे में, इसे कैसे ट्रीट किया जाए और सबसे जरूरी इसकी जॉइंट टेक्नीक को समझा। जिससे इसके नट-बोल्ट से इसे बिना टूटे कैसे

जोड़ा जाए सीखा। ● मनोगना, चंडीगढ़



बांस को मटीरियल के रूप में जानने में मदद मिली। वर्कशॉप से हैंड्स-ऑन एक्सपीरियंस भी मिला। इससे आगे डिजाइन में इसे इस्तेमाल करने में

मदद मिलेगी। ● दीपिका, चंडीगढ़



बांस फ्लैक्सिबल मगर मुश्किल मॉडियम है। वर्कशॉप में इसके पैरामीट्रिक स्ट्रक्चर के रूप में इस्तेमाल करने के बारे में जाना। यह काफी

क्रिएटिव मटीरियल है। ● विशाल सिंह, चंडीगढ़

नीलम-बत्रा-किरण सिनेमा को गिराने की बजाय इनका उपयोग बदलें

अंशुल एन सावी/चंडीगढ़

जब किसी इमारत का मूल कार्य समाप्त हो जाता है, तो उसे गिराने के बजाय उसे दोबारा उपयोग किया जाना चाहिए ताकि आर्किटेक्चर की गरिमा और महत्व सुरक्षित रहे। इसी बात के साथ कनाडा से आए आर्किटेक्ट अजय शाह शनिवार को सेक्टर-12 के सीसीए में लेक्चर देने के लिए ली कार्बुजिए फेस्ट के तहत पहुंचे थे। इसकी थीम थी - द आर्किटेक्चर ऑफ रिलेवेंस। आर्किटेक्ट शाह सीसीए के एलुमिनाई हैं। हमने उनसे बात की। उन्होंने स्टूडेंट्स को समझाया - आर्किटेक्चर को केवल एक स्थिर ढांचे के रूप में नहीं देखना चाहिए, बल्कि बदलते दौर और समय की जरूरतों के अनुसार बिल्डिंग को जीवित रखना उद्देश्य होना चाहिए। इसका एक उदाहरण उदयपुर का ताज लेक पैलेस है, जो असल में शाही परिवार का निवास स्थान था, लेकिन अब एक ताज होटल के रूप में उपयोग किया जाता है। इससे उस इमारत का महत्व और प्रासंगिकता बनी रही, भले ही उसका उपयोग पूरी तरह से बदल गया।



• चंडीगढ़ में कई इमारतें ऐसी हैं, जो कई साल से वीरान पड़ी हैं। इनमें नीलम, बत्रा, किरण थिएटर शामिल हैं। इन्हें किस तरह उपयोग कर सकते हैं?

- चंडीगढ़ एक युवा शहर है, इसलिए इसके कुछ पहलुओं को संरक्षित करना जरूरी है। लेकिन इसके साथ ही, जैसे यहां के कुछ मूवी थिएटर्स या अन्य

पुरानी जगहों का उपयोग बंद हो रहा है, उन्हें गिराने के बजाय उनके उपयोग को बदलना चाहिए। वहां आर्ट गैलरी या डिजाइन सेमिनार जैसी नई चीजें शुरू करके इन इमारतों को पुनर्जीवित किया जा सकता है। पुरानी इमारतों को केवल संभाल कर संग्रहालय जैसा नहीं बना देना चाहिए। इमारतों को जीवित रखना चाहिए, भले ही उनका मूल कार्य बदल जाए, लेकिन



उनके उपयोग और जीवन को निरंतर बनाए रखना जरूरी है। मैक्सिको सिटी, मास्को, लंदन (इंग्लैंड), जापान और ऑस्ट्रिया जैसी जगहों पर कई पुरानी इमारतों को हमने दोबारा उपयोग में लाने का काम किया है। ऑस्ट्रिया में गैस बनाने वाली बड़ी इमारतों को जब बिजली आने के बाद बंद कर दिया गया, तो उन्हें गिराने के बजाय उनमें घर बना दिए गए। इसी

तरह अमेरिका में पुराने मॉल्स को रेजिडेंशियल और पब्लिक फंक्शन वाली जगहों में बदला जा रहा है। ऐसा ही चंडीगढ़ में भी किया जा सकता है।

- आपके पिता आर्किटेक्ट कार्बुजिए-जेनरे टीम का हिस्सा रहे। उनके बारे में बताएं?

- पिता वीएन शाह (हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के चीफ आर्किटेक्ट रहे) ने अपने करियर की शुरुआत में स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, दिल्ली से पढ़ाई करने के बाद पंजाब यूनिवर्सिटी में पियरे जेनरे के साथ मिलकर हॉस्टल और कैम्पस की कई इमारतों पर काम किया था। घर पर बचपन के दिनों में ली कार्बुजिए और पियरे जेनरे को लेकर अक्सर चर्चाएं होती थीं। पापा हर बार यह किस्सा दोहराते - एक बार डिनर पार्टी में पापा और मम्मी दोनों गए। जेनरे से हमारी मुलाकात हुई। कुछ महीनों बाद दूसरी बार डिनर में मिले तो उन्होंने बड़े ही गंभीर अंदाज में पूछा- अच्छा, तो आप अभी भी अपनी ही पत्नी के साथ विवाहित हैं? इसपर हम सभी बहुत हंसते थे। पापा यह भी बताते थे कि जेनरे साइट पर लेबर, कंस्ट्रक्शन और डिजाइन से जुड़े हर पहलू में बेहद सक्रिय और मिलनसार रूप से शामिल रहते थे।

सीसीए को देश का नंबर-1 आर्किटेक्चर संस्थान बनाएं : कटारिया दीक्षांत समारोह में 43 विद्यार्थियों को डिग्रियां, 12 को स्कॉलरशिप; पीएचडी कार्यक्रम शुरू करने पर जोर

माई सिटी रिपोर्टर

चंडीगढ़। पंजाब के राज्यपाल एवं चंडीगढ़ के प्रशासक गुलाब चंद कटारिया ने चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर (सीसीए) के दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान कीं।

उन्होंने शिक्षकों और विद्यार्थियों से कॉलेज को देश का नंबर-1 आर्किटेक्चर संस्थान बनाने के लिए मिलकर काम करने का आह्वान किया। प्रशासक ने 6 एम आर्किटेक्चर

और 37 बी आर्किटेक्चर विद्यार्थियों को डिग्रियां दीं, जबकि 12 विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप से सम्मानित किया गया।

कटारिया ने विद्यार्थियों से प्रकृति के साथ तालमेल रखने वाली इमारतें और शहर विकसित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि चंडीगढ़ युवा आर्किटेक्ट्स के लिए जीवंत प्रयोगशाला है, जहां ट्रैफिक, बढ़ती आबादी, पानी, पर्यावरण और सस्ते मकानों जैसी चुनौतियों के व्यावहारिक समाधान खोजे जा सकते हैं।

उन्होंने कॉलेज में पीएचडी कार्यक्रम

1961 में हुई थी स्थापना

चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर की स्थापना 1961 में ली कॉर्बुजिए की पहल पर हुई थी। समारोह के दौरान ली कॉर्बुजिए फेस्टिवल ऑफ आर्किटेक्चर का समापन भी हुआ।

शुरू करने पर भी जोर दिया, जिससे शिक्षा और शोध को बढ़ावा मिलेगा तथा राष्ट्रीय रैंकिंग बेहतर हो सकती है। उन्होंने चंडीगढ़ की विरासत संरक्षण और यूनेस्को मान्यता के प्रयासों की भी सराहना की।



दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान करते गुलाब चंद कटारिया। आयोजक

Remembrance

चंडीगढ़ के नक्शे पर बनाया कार्बूजिए का पोर्ट्रेट...

चंडीगढ़ | चंडीगढ़ सिर्फ एक शहर नहीं, बल्कि एक प्लान्ड सिटी है। सेक्टर, सड़कों और ब्लॉक्स का खास पैटर्न फ्रांसीसी आर्किटेक्ट



ली कार्बूजिए ने डिजाइन किया था। मंगलवार को उनकी जन्मतिथि पर आर्टिस्ट वरुण टंडन ने इसी पहचान को अपनी कला का आधार बनाते हुए उनका पोर्ट्रेट तैयार किया। उन्होंने बताया कि इसे बनाने के लिए पारंपरिक स्केचिंग या शैडिंग का इस्तेमाल नहीं किया गया। बल्कि चंडीगढ़ के नक्शे के ग्रिड को ही पोर्ट्रेट की लाइनों में

बदला है। नक्शे की सीधी सड़कें, सेक्टरों की सीमाएं और शेष धीरे-धीरे मिलकर कार्बूजिए के चेहरे का स्ट्रक्चर तैयार करती हैं। दूर से देखने पर यह चंडीगढ़ का मैप नजर आता है, लेकिन गौर से देखने पर इन्हीं रेखाओं में कार्बूजिए का चेहरा दिखाई देता है। ए4 पेपर पर ब्लैक जेल पेन से बनाए इस पोर्ट्रेट को तैयार करने में करीब पांच घंटे लगे। इसमें किसी रंग का इस्तेमाल नहीं किया गया है। सिर्फ काली स्याही की बारीक और लगातार चलती लाइनों से चेहरे की पूरी आकृति बनाई है।

CHANDI GEDI

दैनिक भास्कर, CHANDIGARH, WEDNESDAY, 07/10/2026 . 02

कैपिटल कॉम्प्लेक्स के बाद चंडीगढ़ हाईकोर्ट का हैरिटेज इंपैक्ट असेसमेंट बेलजियम भेजा जा रहा

Le Corbusier Fest

ली कार्बुजिए फेस्टिवल का समापन मंगलवार को सेक्टर-12 के चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में हुआ। इस मौके पर पंजाब के राज्यपाल व चंडीगढ़ के प्रशासक गुलाब चंद कटारिया पहुंचे।

सिटी रिपोर्टर/चंडीगढ़

जब कोई भी इमारत बनाना शुरू करते हैं तो सबसे पहले भूमि पूजन होता है। उसका संदर्भ होता है कि मां धरती में खुदाई करने से पहले उसे पूजकर उसकी इजाजत लेना। यह कहा पंजाब के राज्यपाल व चंडीगढ़ के प्रशासक गुलाब चंद कटारिया ने। वह मंगलवार को सेक्टर-12 के चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में चल रहे ली कार्बुजिए फेस्ट में पहुंचे। यह फेस्ट चंडीगढ़ कैपिटल कॉम्प्लेक्स के यूनेस्को वर्ल्ड हैरिटेज साइट में शामिल होने के 10 साल पूरे होने पर मनाया गया, जो 25 सितंबर से 6 अक्टूबर तक चला। 6 अक्टूबर ली कार्बुजिए के जन्मदिवस पर इसका समापन हुआ। इस मौके पर कॉलेज की प्रिंसिपल प्रो. संगीता बग्गा ने कहा - जो संस्कृति हमारे यहां है, उसी को अलग तरह से ली कार्बुजिए भी फॉलो करते हैं क्योंकि वह अपने डिजाइन में रूप गार्डन जोड़ते हैं। नीचे धरती को खोदकर उसमें कंक्रीट डालते हैं तो उसे गार्डन से क्षति पूरी करते हैं। उन्होंने कार्बुजिए की उन 17 साइट्स पर बात की, जो यूनेस्को वर्ल्ड हैरिटेज साइट में शामिल हैं। कार्बुजिए के पांच मुख्य तत्व जैसे रिबन विंडो, पिलॉटिस/आरसीसी कॉलम, त्रि प्लान और टेरेस/रूप गार्डन के बारे में बताया।



कैपिटल कॉम्प्लेक्स के कंजर्वेशन और सुरक्षा को लेकर क्या कदम उठाए जा रहे हैं?

प्रो. संगीता बग्गा ने कहा - 2016 में जब कैपिटल कॉम्प्लेक्स को यूनेस्को वर्ल्ड हैरिटेज साइट का नॉमिनेशन मिला, तब सेक्टरिएट की बालकनी में एयर कंडीशनिंग यूनिट और स्टील की अलमारियां फंसाई हुई थीं, जिन्हें रिपयूजी बालकनी के रूप में खाली करवाया गया था। आईआईटी रुड़की के साथ मिलकर कैपिटल कॉम्प्लेक्स की कंजर्वेशन (आरसीसी स्ट्रक्चर्स और सरिए को जंग से बचाने के लिए) का काम सफलतापूर्वक हम पूरा कर चुके हैं। बिल्डिंग्स को आपदाओं (जैसे आग या भूकंप) से सुरक्षित बनाने के लिए इवैक्यूएशन प्लान, सुरक्षा योजना, और स्पेशली-एबलड और विजुअली इंपैयर्ड लोगों के लिए रैंप व बेल जैसी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। आग या आपात स्थिति से निपटने के लिए वहां के कर्मचारियों और निवासियों को मॉक ड्रिल और सैनिटाइजेशन ट्रेल्स भी करवाई जाती हैं।

फ्यूचर के लिए प्लान

- हैरिटेज एरिया में कोई भी नया काम या हस्तक्षेप करने से पहले यूनेस्को की टूलकिट के तहत हैरिटेज इंपैक्ट असेसमेंट (एचआईए) किया जाता है।
- बेलजियम के एंटवर्प में होने वाली मीटिंग में हाईकोर्ट के विस्तार का एचआईए भी भेजा जा रहा है। इस बफर जोन के अंतर्गत सेक्टर-2, 3, 4, 5, लेक के आसपास का क्षेत्र और सुखना वाइल्डलाइफ फॉरेस्ट का इलाका आता है।